॥ श्रीहरिः ॥ 121

श्रीएकनाथ-चरित्र

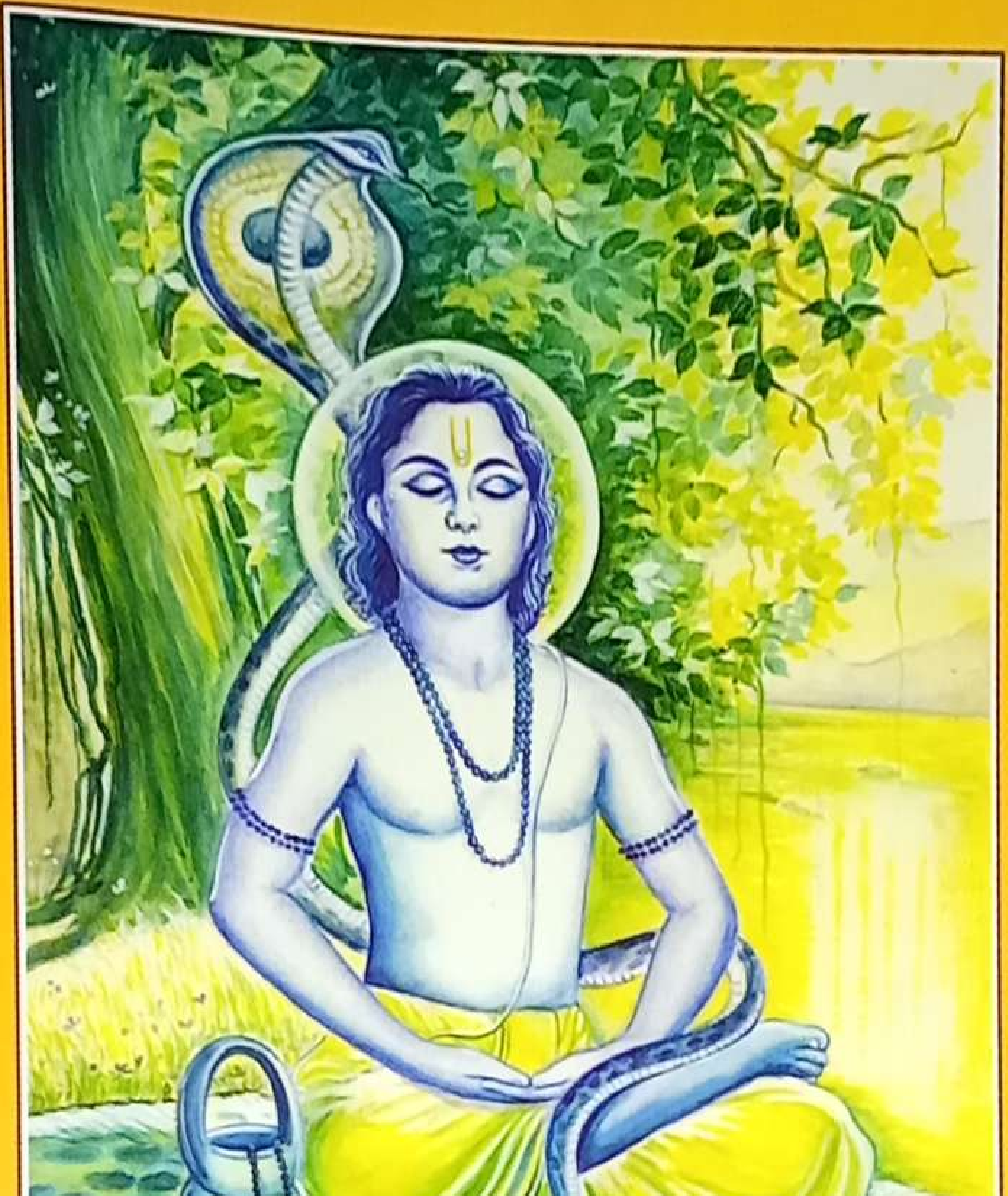

GITA PRESS, GORAKHPUR

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

भूमिका

यह चरित्र एकनाथ महाराजका है। इनका नाम महाराष्ट्रमें अत्यन्त लोकप्रिय है। श्रीज्ञानेश्वरका नाम गम्भीर बना देता है, तुकारामके नाममें लीनता है, रामदासके नामकी धाक है, वैसे ही इनके नाममें सबको प्रसन्न कर देनेकी शक्ति है। कारण इनका चरित्र ऐसा ही है जो पाठक आगे पढ़ेंगे। काशीमें जैसे गंगा बहती हैं, वैसे ही महाराष्ट्रमें, विशेषकर पैठणमें एकनाथकी स्मृतिगंगा बहती है। आज भी महाराष्ट्रमें सर्वत्र एकनाथषष्ठी मनायी जाती है और पैठणमें तो इस दिन सब दिशाओंसे यात्री एकत्र होते और इस स्मृतिगंगामें स्नानकर कृतार्थताका अनुभव करते हैं। प्रतिष्ठान या पैठण किसी समय विद्याका एक प्रधान केन्द्रस्थान था, पर आज पैठणमें और तो कुछ नहीं, पर एकनाथकी दिव्य स्मृति है। पैठणकी विद्या सफल हो गयी जब एकनाथ उत्पन्न हुए। पैठणमें एकनाथ महाराजका स्थान अभीतक है, 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' के न्यायसे उनके वंशधरोंको मिली हुई जागीर भी है, वंशधर भी हैं, एकनाथ महाराजकी स्मृति और उनका कार्य भी है। स्मृतिके उत्सव भी होते हैं।

चरित्र एकनाथ महाराजका है। अवलोकन और लेखन महाराष्ट्रके सुप्रसिद्ध हरिभक्तिपरायण विद्वान् लेखक पं० लक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकरका है, इस हिंदी अनुवादकी भाषा केवल मेरी है। अनुवादमें प्रसंगके अनुसार मूलके कुछ ऐसे मराठी अवतरण मैंने छोड़ दिये हैं, जिनके छोड़ देनेसे मेरे विचारमें प्रसंग, रस या हेतुकी कोई हानि नहीं होती। उदाहरणार्थ, 'रुक्मिणी-स्वयंवर'का मूलमें जो विस्तारपूर्वक वर्णन है और जिसका हेतु इसका पारमार्थिक पहलू दिखलाना है, उसे मैंने बहुत संक्षेपमें दिया है। 'भावार्थ-रामायण'के प्रसंगमें भी ऐसा ही किया है। 'एकनाथ भागवत'से बोधवचनोंका जो संग्रह दिया है, वह मानो इसके बदलेमें मूल ग्रन्थमें दिये हुए वचनोंसे बहुत अधिक है। इन दो-एक बातोंको छोड़कर यह सर्वथा श्रीपांगारकरजीकी पुस्तकका ही अनुवाद है।

इस अनुवादकी प्रेरणा अपने सम्मान्य और परम प्रेमास्पद मित्र श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारने की। उनका यदि इस ओर ध्यान न होता तो शायद मैं एकनाथ महाराजके इस गुणानुवादसे प्राप्त होनेवाले अप्रत्यक्ष सत्संगसुखसे वंचित ही रहता। मुझे यह अनुवाद करते हुए जो आनन्द मिला वह अमूल्य है। उसका मूल्य यदि कुछ हो सकता है तो वह यही है कि इससे पाठकोंका सात्त्विक मनोरंजन हो और हम सबके लिये एकनाथ महाराजका दृष्टान्त सत्पथका प्रदर्शक हो।

काशी, ज्येष्ठ कृ० १२, सं १९८९ — लक्ष्मण नारायण गर्दे

बुधवार

श्रीहरिः

ग्रन्थकारकी प्रस्तावना

श्रीएकनाथ महाराजका यह संक्षिप्त चरित्र मराठी-पाठकोंके सामने मैं आज सादर उपस्थित करता हूँ। नाथ महाराजका विस्तृत चरित्र लिखनेका विचार मैंने अभी स्थगित रखा है। सत्कवि श्रीमोरोपन्तके 'चरित्र और काव्य-विवेचन'का ६०० पृष्ठोंका ग्रन्थ मैं दो वर्ष पहले रसिकोंके सामने रख चुका हूँ। ऐसा ही एकनाथ महाराजका बृहच्चरित्र लिखनेका काम मैंने अपने सिर उठा लिया है और उसके काव्य-विवेचन-सम्बन्धी दो-तीन अध्याय मैं लिख भी चुका हूँ। श्रीज्ञानेश्वर, श्रीनामदेव, श्रीएकनाथ, श्रीतुकाराम और श्रीरामदास इस पंचायतनके साद्यन्त चरित्र विस्तृत परिमाणपर लिखनेका मेरा संकल्प पहलेसे था और अब भी है; तथापि इस विस्तृत परिमाणपर लिखे जानेवाले चरित्रोंके पहले आबाल-वृद्ध, छोटे-बड़े और अमीर-गरीब सबके संग्रह करनेयोग्य बोधप्रद, आनन्ददायक तथा सुबोध भाषामें लिखे हुए संक्षिप्त चरित्र लिखनेके लिये अनेक मित्रोंने मुझसे बहुत कहा और इसीको श्रीहरिकी आज्ञा मानकर मैं इस कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूँ।

यह एकनाथ महाराजका चरित्र पहले प्रकाशित हो रहा है और इसके बाद ज्ञानेश्वर महाराज, नामदेव महाराज, तुकाराम महाराज, रामदास स्वामी आदि विख्यात साधु-महात्माओंके चरित्र क्रमसे लिखकर प्रकाशित करनेका विचार है, जिसे सत्यसंकल्पके दाता भगवान् पूर्ण करें। प्रस्तुत चरित्र पाँच सप्ताहमें लिखकर तैयार हुआ, इसीसे यह आशा हुई है। सन्त श्रीहरिके उपासक और जीवोंके परम मित्र होते हैं। उनकी वाक्-सुधा-सरितामें अखण्ड निमज्जन करते और उनके गुण गाते और सुनते हुए आनन्दसे अपने मूल पदको प्राप्त करें, ऐसी प्रीति श्रीहरिने ही उत्पन्न की है और इसका पोषण करनेवाले भी वही हैं। सन्त जीवोंके माता-पिता हैं। ज्ञानेश्वरी, नाथभागवत, अमृतानुभव, दासबोध, नामदेव, तुकारामादिके अभंग और सहस्त्रों भजनादि ग्रन्थोंके रूपमें सन्त ही अवतीर्ण हुए हैं। सन्तके संगसे मनका मैल धुल जाता है, मन स्थिर होकर हरि-चरणोंमें लीन होता है; विषय बाधक क्या होंगे, उनका स्मरण भी नहीं होता, संसार सारभूत और आनन्ददायक प्रतीत होता है। 'मैं' पन मरता और सर्वात्मभाव जाग उठता है और सब